

पंक्ति-शूल पुं. (तत्.) पाचन की गड़बड़ी से होने वाला शूल या पेट-दर्द।

पंख पुं. (तद्.) 1. पर, डैने, पक्षियों के शरीर का वह अंग जिसके द्वारा वे हवा में उड़ते हैं मुहा. (i) पंख जमना- भागने, खिसकने या कुमार्ग पर चलने अथवा प्राण गँवाने का लक्षण प्रगट होना (ii) पंख लगना (लगाना)- उड़ान भरना, पक्षी की चाल से युक्त होना 2. पाँखी 3. (साखू के) फल के ऊपर की छोटी हलकी परत 4. उड़ने वाला कोई छोटा कीड़ा (फतिंगा) 5. पहाड़ी भेड़ों पर से उतरने वाली बढिया मुलायम ऊन।

पंखड़ी स्त्री. (तद्.) पुष्प के दलपुंज का प्रायः, रंगरंजित अंग या भाग जिसके मुरझा जाने से फूल मुरझा जाता है और जिनके खिलने से वह खिल उठता है।

पंखा पुं. (तद्.) ऐसा साधन या युक्ति जिसके हिलने-डुलने या घूमने से हवा मिलती है 2. ताड़ आदि के पत्तों या प्लास्टिक आदि से बना हुआ हवा करने का एक साधन, पंखा 3. बिजली से चलने वाला पंखा।

पंखिया स्त्री. (तद्.) भूसी के बारीक टुकड़े, पंखड़ी।

पंखुड़ा पुं. (तद्.) मनुष्य के कंधे के पास का वह भाग जहाँ हाथ जुड़ा होता है, कंधे और बाँह का जोड़।

पंखुरी स्त्री. (तद्.) दे. पंखड़ी, फूल का दल, फूल के विभिन्न दलों में से एक।

पंग वि. (तद्.) 'पंगु' के लिए प्रयुक्त बोलचाल का शब्द। अपंग, विकलांग, लँगड़ा, (एक पैर या टाँग से अपंग) 2. बेकाम, स्तब्ध।

पंगत स्त्री. (तद्.) 1. पंक्ति, पाँति, कतार 2. भोज में एक साथ खाने वालों की पाँति 3. एक ही जाति या समाज के लोगों का समूह, एक ही जाति का समाज।

पंगति स्त्री. (तद्.) दे. पंगत।

पंगा वि. (तद्.) 1. पंगु, लँगड़ा, बेकाम दे. पंग 2. बखेड़ा, झमेला मुहा. पंगा खड़ा करना।

पंगु वि. (तत्.) 1. जो पैरों से न चल सकता हो; लंगड़ा, जिसके पैर न रहे हों या खराब हों, या हो गए हों 2. लाक्षणिक अर्थ में अशक्त 3. एक प्रकार के वातरोग से होने वाली दशा जिसमें मनुष्य के घुटने अकड़ जाते हैं और मनुष्य चल-फिर नहीं सकता 4. शनि ग्रह, जिसकी गति अत्यंत धीमी होती है।

पंगुक वि. (तत्.) दे. पंगु।

पंगु गति स्त्री. (तत्.) वर्णिक छंदों का एक दोष जिसमें दीर्घ मात्रा के स्थान पर ह्रस्व मात्रा का उपयोग यति से किया गया हो।

पंगुता स्त्री. (तत्.) 1. लंगड़ापन 2. स्तब्धता 3. अशक्तता।

पंगुत्व पुं. (तत्.) लँगड़ापन।

पंगुल पुं. (तत्.) 1. अंडी का तेल 2. काँच जैसा सफेद घोड़ा वि. (तत्.) 1. जिसके हाथ पैर टूटे हुए हों 2. अकर्मण्य, आलसी।

पंच वि. (तत्.) 1. पाँच अर्थात् चार के बाद आने वाली संख्या जैसे- पंचेद्वियाँ 2. पुं. (तत्.) न्याय करने वाले पाँच व्यक्तियों का समूह।

पंचक वि. (तत्.) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पाँच नक्षत्र धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद तथा रेवती, इन नक्षत्रों में शुभ कार्य वर्जित है।

पंचकन्या स्त्री. (तत्.) द्रौपदी, अहल्या, मंदोदरी, तारा तथा कुंती, ये पाँचों स्त्रियाँ सदा कन्या की तरह रहीं तथा पवित्र मानी जाती हैं।

पंचकर्म पुं. (तत्.) न्या. पाँच प्रकार के कर्म-उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन वैद्यक आयुर्वेद के अंतर्गत पाँच क्रियाएँ: वमन, विरेचन, नस्य, निरूह वस्ति और अनुवासन।

पंचगौड़ पुं. (तत्.) उत्तर भारत के ब्राह्मणों के पाँच प्रकार; सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल तथा उत्कल।